अभिव्यंजना

2023-2024

राजकीय महाविद्यालय सराहाँ
जिला सिरमौर - हि० प्र०

PRINCIPAL WELCOMING THE CHIEF GUEST OF ANNUAL PRIZE DISTRIBUTION FUNCTION 2023-2024

CHIEF GUEST LIGHTING THE LAMP

CSCA, PTA, OSA AND ROVERS & RANGERS 2023-2024

NSS VOLUNTEERS DOING SOCIAL SERVICES ACTIVITIES 2023-2024

VARIOUS ACTIVITIES OF CAREER COUNSELLING AND PLACEMENT CELL AND RED RIBBON CLUB 2023-2024

ROAD SAFETY CLUB, ANTI-DRUG CELL AND CYBER AWARENESS CELL 2023-2024

EDITORIAL BOARD AND WOMEN CELL ACTIVITIES

CO-CURRICULAR ACTIVITIES 2023-2024

GLIMPSES OF ANNUAL PRIZE DISTRIBUTION FUNCTION 2023-24

NEWSPAPER COVERAGE OF VARIOUS ACTIVITIES SESSION 2023-2024

Form - IV

(See Rule 8)

ABHIVYANJANA 2023-2024

Name of Pubication	:	Government College, Sarahan (H.P.)
Periodicity of Publication	:	Yearly
Name of the Printer	:	B.S Graphic, Chandigarh
Nationality	:	Indian
Name of the Publisher	:	Dr. Anita Thakur
Nationality	:	Indian
Address	:	Government College, Sarahan (H.P.)
Name & Address of the Owner of the Magazine	:	Dr. Anita Thakur (Principal) Government College, Sarahan Distt. Sirmour (H.P.) - 173024

N.B.: Contributors are solely responsibility for views expressed by them. The editiors & Chief Editor do not Necessarily confirm and share to the views and ideas expressed by them. They will not be liable for any action out of copyright violation by contributors.

Certificate

I, Jagmohan Thakur hereby solemnly declare that the above details are correct to the best of my knowledge and belief.

Chief Editor
Jagmohan Thakur

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)

Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001
Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dhe-sml-hp@gov.in

MESSAGE

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine .

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)

Message

Dear Students,

Welcome to Government Degree College, Sarahan. Established in 2014 , this is co-educational institution having well qualified and committed team of teachers and office staff . We create a healthy environment by building better relationship between teachers and students . We instill spirit , creativity and innovative abilities among students by organising cultural, curricular and extra curricular activities and encourage students' participation.

As we commence another chapter of our academic journey, I extend a warm welcome to each and every one of you. You must know that you are an integral part of our college community. We are here, just for you.Students, college life is the time of growth, discovery, and transformation. It's a journey of selfexploration and academic pursuit that shapes our future and moulds our character. I encourage you to embrace this journey wholeheartedly with passion, determination, and a thirst for knowledge. But this journey of teaching and learning will fructify only when you put in your best efforts to obtain this education and then to utilise it to serve the society in the best possible way. At the same time, I encourage you to prioritize your well-being and mental health. Remember to take breaks , seek support when needed and prioritize self-care. I'm sure that our College shall endeavour to be a big factor in social-economic transformation of its students as well as the people of this region not only through multi dimensional classroom instructions in different courses of study , but education in its full scope which leads to the enlargement of intellectual as well as humanistic dimensions of the students in a holistic manner.

The more we learn the more we grow, and the more we grow, the better we can serve others ,our communities and the world.

May God bless you…

Dr. Anita Thakur
PRINCIPAL

हिन्दी अनुभाग

सम्पादकीय

बहुत ही हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय सराहाँ सत्र 2023–24 के लिए 'अभिव्यंजना' पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है। लेखन एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव चिंतन प्रक्रिया से होकर गुजरती है। कभी कल्पनाओं के सागर से गुजरकर पल्लवित होती है तो कभी वास्तविक सामाजिक परिवेश में पल रही बुराइयों पर कटाक्ष बन कर उभरती है। पत्रिका विद्यार्थियों द्वारा अपने विचारों एवं विचारधारा को अभिव्यक्त करने का एक सरल, सहज एवं सशक्त माध्यम होती है। महाविद्यालय पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक रचना विद्यार्थियों के ज्ञान, अवबोध, रचनात्मकता, संप्रेषण कौशल आदि में वृद्धि का महत्वपूर्ण सोपान है। महाविद्यालय पत्रिका के माध्यम से ही हम इस नवीन पीढ़ी के विचारों एवं इनके द्वारा अनुसरित विचारधारा से अवगत हो सकते है। इस क्रम में महाविद्यालय पत्रिका अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर ही गतिविधियों को संचालित करे जो कि इन बच्चों को साधारण से ऊपर उठाकर असाधारण की श्रेणी मे खड़ा कर सके। मैं बच्चों को उनके प्रयासों के लिए बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि निकट भविष्य में भी बच्चे इसी तरह से प्रयासरत रहेंगे और अपने महाविद्यालय तथा अपने माता–पिता का नाम रोशन करेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार को हृदय की अंतरतम गहराइयों से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगल शुभकामनाएँ।

डॉ. मोल्लम डोलमा
प्राध्यापिका सम्पादक
हिन्दी अनुभाग

हिंदी भाषा का विकास

जन–जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी।।
जिसने पूरे देश को जोडे रखा है, वह मजबूत धागा है हिन्दी।।
जिस ने काल को जीत लिया, ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी ।।
सरल शब्दों मे कहा जाए जो, जीवन की परिभाषा है हिन्दी ।।

सांस्कृतिक रूप से भारत एक प्राचीन देश है। लेकिन राजनीतिक रूप से एक आधुनिक राष्ट्र के रूप मे इसका विकास, ब्रिटिश शासन के दौरान स्वंतत्रता संग्राम में हुआ। हिंदी भाषा और अन्य क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं ने, राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता की चेतना के सन्देश को घर–घर पहुंचाया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन भाषाओ ने भारतीय स्वतंत्रता अभियान को व्यापक आधार देते हुए लोकतंत्र की मूल अवधारणा की पुष्टि करना जारी रखा। उस समय की एक सोच यह भी थी कि जब स्वतंत्रता आएगी तो सार्वजनिक व्यवहार और शासन में भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा। आजादी आई और हमने संविधान बनाने की प्रक्रिया शुरू की तब संविधान का मसौदा अंग्रेजी मे बनाया गया था और संविधान की बहस अधिकतर अंग्रेजी मे हुई। यहाँ तक कि हिन्दी के अधिकांश समर्थक भी अंग्रेजी भाषा मे ही बात करते थे। बहस 12 सिंतबर 1949 को शाम 4 बजे शुरू हुई और 14 सिंतबर 1949 को समाप्त हुई। संविधान के भाग–17 के अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए है। संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत संघ की राजभाषा के संबंध मे प्रावधान किया गया है। अनुच्छेद 343 के खंड (1) के अनुसार देवनागरी लिपि मे लिखी जाने वाली हिंदी संघ की राजभाषा है। इसके बावजूद जब तक हिंदी राष्ट्रीय संपर्क की मुख्य भाषा नही बनती, जब तक हिंदी शिक्षा, अनुसंधान, विज्ञान, शासन, प्रशासन कानून और अदालतो की भाषा नही बनती, तब तक हिन्दी की सर्वव्यापकता भारत मे संभव नही है। भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा प्रत्येक प्राणी अपने विचार व भावनाओं का आदान–प्रदान करता है। यह एक ऐसी क्षमता है जो मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करता है। भाषा का सही प्रयोग सफलता और मान सम्मान दिला सकता है। लेकिन इस वाणी में विकृति होने पर व्यक्ति निंदा और असफलता का पात्र भी बन सकता है। अतः भाषा का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। अपने शासनकाल मे अंग्रेजों ने प्रचलित राजभाषा उर्दू का आश्रय लिया। नतीजतन स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद भी उर्दू भारत के अधिकांश हिस्सो में अदालतों की भाषा बनी रही। 1855 मे लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी को भारत मे शिक्षा और प्रशासन की भाषा के रूप मे स्थापित किया था। फिर भी अंग्रेजी शासकों को यह अहसास होता रहा कि, भारत की भाषाओं को लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता। इतना ही नहीं स्वतंत्रता संग्राम के साथ हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप मे लोकप्रिय बनाने के प्रयास किए।

महात्मा गाँधी ने भी यह विचार व्यक्त किया था कि भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमे वह सभी गुण विद्यमान है जो राष्ट्रभाषा मे होने चाहिए। महात्मा गांधी और अन्य नेताओं के उपदेशों का परिणाम यह हुआ कि जब भारत की संविधान सभा मे केन्द्र की राजभाषा तय करने का सवाल उठा तो 14 सिंतबर 1949 मे व्यापक विचार विमर्श के बाद हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित कर दिया गया।

किसी भी स्वतंत्र देश के लिए उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान का वही महत्व होता है, जो उसकी राजभाषा का होता है। एक लोकतांत्रिक देश मे जनता और सरकार के बीच भाषा की दीवार नहीं होनी चाहिए और शासन का काम जनता की भाषा में होना चाहिए। राजभाषा देश के विभिन्न भागों को जोड़ने का काम करती है, जिसके माध्यम से लोग न केवल अपने देश की नीतियों और प्रशासन को अच्छी तरह से समझते है बल्कि उसमें भाग भी ले सकते है। भारत की संविधान सभा इस बात से भली भांति परिचित थी। इसलिए 1950 मे हिन्दी को औपचारिक रूप में राजभाषा का दर्जा दिया गया। तब से लेकर प्रत्येक वर्ष 14 सिंतबर को अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस मनाया जाता है। सर्वप्रथम 14 सिंतबर 1953 को हिन्दी दिवस मनाया गया था।

हालाँकि भारत एक बहुभाषी देश था, लेकिन बहुत लंबे समय तक हिन्दी या इसके किसी न किसी रुप का उपयोग एक बड़े हिस्से पर संपर्क भाषा के रुप मे किया जाता था। भक्ति काल मे उत्तर से दक्षिण तक पूर्व से पश्चिम तक अनेक संतो ने हिन्दी मे अपनी रचनाएँ की। हिन्दी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन मे एक बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, सुब्रमण्यम भारती आदि ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सपना देखा था। हालांकि राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमो के अनुसार, कई पत्र और प्रकाशन द्विभाषी रुप मे या केवल हिन्दी में जारी किए जाने है। लेकिन सरकारी प्रैस की हिन्दी की छपाई अभी भी संतोषजनक नही है। यह भी देखा गया है कि राजभाषा नीति के कियान्वयन के लिए अभी तक मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों आदि में उचित कर्मचारियों की व्यवस्था नही की गई है। परन्तु फिर भी विभिन्न प्रयासों के द्वारा हिन्दी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागो, कार्यालयों, उपक्रमो आदि मे वार्षिक कार्यक्रमों को पूर्ण करने के प्रयास किए जा रहे है। यद्यपि हमारी मंजिल कुछ दूर है, परन्तु हम सब का सहयोग लेते हुए सशक्त और संतुलित कदमो से उसकी तरफ बढ़ रहे है। मुझे आशा है, हम देर सवेर अपनी मंजिल तक अवश्य पहुँचेंगे।

गूंजी हिन्दी विश्व मे, स्वप्न हुआ साकार।।
राष्ट्र संघ के मंच से, हिन्दी की जयकार।।

हिमानी शर्मा,
बी.ए. द्वितीय वर्ष,
रोल न. 22317

सिरमौर का इतिहास

सिरमौर का नामकरण – सिरमौर के प्राचीन निवासी कुलिंद थे। कुलिंद राज्य मौर्य साम्राज्य के शीर्ष पर स्थित था, जिस कारण इसे शिरमौर्य की संज्ञा दी गई जो कालांतर मे सिरमौर बन गया। अन्य जनश्रुतियों के अनुसार राजा रसालू के पूर्वज का नाम सिरमौर था इसलिए राज्य का नाम सिरमौर रखा गया। रियासत की राजधानी का नाम सिरमौर होने के कारण रियासत का नाम सिरमौर पड़ा। इस क्षेत्र मे सिरमौरिया देवता की पूजा की जाती थी जिसके कारण राज्य का नाम सिरमौर रखा गया।

सिरमौर का अर्थ– सिरमौर का नाम सिरमौर क्यो पडा, ऐसा माना जाता है कि पुराने समय मे यहाँ पर मौर्य वंश हुआ करता था। उस समय सिरमौर को शिरमौर्या के नाम से जाना जाता था। चंद्रगुप्त मौर्य का शासन यहाँ पर भी था। समय के साथ–साथ शिरमौर्य को सिरमौर के नाम से जाना गया।

सिरमौर की स्थापना– ''तारीख ऐ रियासत सिरमौर'' रंजौर सिंह की पुस्तक के अनुसार सिरमौर रियासत का नाम सुलोकिना था। इसकी स्थापना 1139 ई० मे जैसलमेर के राजा सातवाहन के पुत्र रसालू ने की थी। उसकी राजधानी सिरमौर ताल थी। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार राजा मदन सिहं ने जादू टोना करने वाली स्त्री को धोखा देकर गिरी नदी मे मरवा दिया। स्त्री के शाप से गिरी नदी के बाढ़ मे रियासत बह गई और उसका कोई उत्तराधिकारी जीवित नही बचा जिसके बाद जैसलमेर के सातवाहन द्वितीय ने अपने तीसरे पुत्र हांसु और उसकी गर्भवती रानी को सिरमौर भेजा। हांसु की रास्ते में मृत्यु के बाद गर्भवती रानी ने सिरमौरी ताल के पोका मे पलाश के वृक्ष के नीचे राजकुमार को जन्म दिया जिसका नाम पलासू रखा गया तथा राजवंश का नाम पलासिया कहा जाने लगा। 1934 ई० के ''गजेटीअर ऑफ सिरमौर'' के अनुसार जैसलमेर के राजा उग्रसेन (सातवाहन द्वितीय) हरिद्वार तीर्थयात्रा पर आए। सिरमौर की गद्दी खाली देख उन्होंने अपने पुत्र शोभा रावल को रियासत की स्थापना के लिए भेजा। शोभा रावल ने 1195 ई० मे राजबन को सिरमौर रियासत की राजधानी बनाकर सिरमौर रियासत की स्थापना की।

नीतिका
बी०ए० द्वितीय वर्ष
रोल न० 22269

वामन द्वादशी मेला

जिला सिरमौर के दो ही मेले राष्ट्रीय मेले जिनमें भाद्रपद की शुक्ल द्वादशी को वामन महाराज का जन्मदिन मनाया जाता है। भागवत् के अनुसार जब राजा बलि ने तीनों लोकों पर राज कर अपना अधिकार तीनों लोकों पर कर दिया तो स्वर्ग के देवता परेशान हुए। इसके कारण वामन महाराज की माता अदिती ने विष्णु भगवान की तपस्या की और वर में माँगा कि भगवान दैत्य और देवता लड़े बिना ही देवता को स्वर्ग का राज्य वापिस दिलाया जाए। विष्णु भगवान प्रसन्न हुए और वामन महाराज के रूप मे प्रकट होकर माता से कहा आप निश्चिंत होइए और मैं देवता को स्वर्ग का राज्य दिलाऊगाँ। वचनों के अनुसार भाद्रपद की शुक्ल द्वादशी को राजा बलि के यहाँ बटुक के रूप मे प्रकट हुए। उस समय महाराज बलि यज्ञ कर रहे थे। बटुक भिक्षा माँगने हेतु राजा के द्वार पर गए। तब राजा ने कहा माँगो आपको दान मे क्या चाहिए। मोती, माणिक या धन आप जो भी मांगोगे दिया जाएगा। परन्तु भिक्षुक महात्मा ने तीन पग जमीन माँगी। राजा ने कहा तीन पग धरती माँग कर क्यों मेरा उपहास करते हो। परंतु भिक्षुक ने कहा कि मुझे तीन पग धरती ही चाहिए। तब दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य ने तीन पग देने से बार–बार राजा बलि को रोका। परंतु राजा बलि बटुक को वचन दे चुके थे। वामन महाराज ने दो ही पग मे तीनों लोक नाप दिए और राजा से कहा राजन में तीसरा पग कहाँ रखूँ। तब राजा ने कहा महात्मा मेरा वचन सत्य हो इसलिए तीसरा पग मेरे सिर पर रखे। वामन महाराज ने बलि के सिर पर पैर रख कर बलि को पाताल का राज्य दिया और देवताओं को स्वर्ग का राज्य दिया। इस दिन को सिरमौर में सराहाँ के तालाब में वामन महाराज की किश्ती तराई जाती है और इनकी पालकी को जहाँ पर दुकानकार बाज़ार लगाते है वहाँ घुमाई जाती है। श्रद्धालु दान भी देते हैं। भगवान की झाँकी निकाली जाती है। मेले के दूसरे दिन कुश्ती और प्रदर्शनी भी लगाई जाती है। विजेताओं को इनाम बाँटे जाते हैं।

रितू
बी०ए० द्वितीय वर्ष
रोल न० 22207

प्राचीन श्री सिद्ध हनुमान मंदिर, जोहाना (सराहाँ)

बहुत से प्राचीन सिद्ध मंदिरों की स्थापना के बारे में आमतौर पर ''कहा जाता है कि यहाँ ऐसा हुआ है'' यह पंक्तियाँ जुड़ी होती है। परंतु प्राचीन सिद्ध हनुमान मंदिर भारत के कुछ गिने चुने सिद्ध स्थानों में से एक है जिनकी स्थापना का इतिहास केवल किंवदंती नहीं बल्कि क्षेत्र वयोवृद्ध बुजुर्गों द्वारा प्रमाणित है। वे बताते है कि तप साधना करने के बाद एक बाल ब्रह्मचारी सिद्ध बाबा (1008 श्री रामदास जी महाराज) को हनुमान जी की दिव्य सिद्धि प्राप्त हुई तथा उन्होंने यहां बजरंग बली जी की दिव्य (गाय के गोबर, मिट्टी तथा धुणे की दिव्य भस्म से) प्रतिमा का निर्माण कर मंदिर की स्थापना की । जोहाना एवम् सराहां आँचल के अन्य गाँव के वयोवृद्ध बुजुर्ग जो सिद्ध बाबा जी के सानिध्य में रहे, बताते है कि गुरू जी गर्मियों में पंचधुनी तपस्या (सिर पर अग्नि जलाकर) किया करते थे। सर्दियों में रात–रात भर बावड़ी के बर्फीले ठण्डे पानी में बैठकर कठिन साधना किया करते थे। सराहां वा नाहन क्षेत्र में तो उनके सैंकड़ो शिष्यगण थे। संत समाज में भी वह उस समय के संपूर्ण भारत वर्ष के गिने चुने उच्च श्रेणी के तपस्वी श्री महंतो में शामिल थे। आज भी उनके द्वारा उस समय संचालित (कानपुर खालसा) कुम्भ मेलों में अपनी विशिष्ट पहचान रखे हुए थे। यदि हम उस दिव्य विभूति के चमत्कारों एवं भक्तों पर कृपा के उदाहरण का वर्णन करना चाहें तो यह सूर्य को दीपक दिखाने जैसा होगा।

लगभग सौ वर्ष प्राचीन यह सिद्ध हनुमान मंदिर सिद्ध बाबाजी के देव गमन के बाद काफी सालों तक उपेक्षित सा रहा। वर्तमान में महंत साध्वी गंगा दास महाराज, जो की सिद्ध बाबा जी की शिष्य है, के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में महंत परमेश्वर दास जी इस विलक्षण दिव्य एवं चमत्कारिक सिद्ध हनुमान मंदिर की धरोहर को संभाल रहे है। महंत परमेश्व दास भी सिद्ध बाबा जी की ही शिष्य परंपरा से उनके अन्य सिद्ध शिष्य (श्री श्री 1008 श्री बद्रीदास जी एवं श्री भरत दास जी महाराज जिन्होने मांउट आबू राजस्थान में ज्ञान गुफा नामक एक ओर दिव्य स्थान की स्थापना की) के एक मात्र दीक्षित शिष्य है। आज महन्त परमेश्वर दास जी के कुशल मार्ग दर्शन में इस गुरू एवं दादा गुरू जी की तपोस्थली में वर्षभर श्रद्धालुओं द्वारा विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, संत समागम, लंगर, भण्डारों, कीर्तन, हवन, यज्ञ का आयोजन चलता रहता है। इन सभी कार्यक्रमों की व्यवस्था मंहत जी के मार्ग दर्शन में जोहाना गाँव के भक्तगण बड़े ही भक्ति एवं सेवाभाव से संभालते है।
हनुमान जी की दिव्य एवं चमत्कारिक शक्ति की महत्वता के कारण आज यह स्थापना न केवल हिमाचल अपितु हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड के भक्तों के लिए भी एक सिद्ध पीठ के रूप में शुमार होता जा रहा है। जो भी यहां मन्नत मांगने आता है कभी हनुमान जी के दरबार से निराश नहीं लौटता है। गौरतलब है कि इतनी विलक्षणताओं एवं मंदिर में विगत पांच छः वर्षों से लगातार चल रहे सौंदर्यकरण एवं निर्माण कार्य के बावजूद किसी तरह का चंदा इकट्ठा करने पर पाबंदी है। जिस किसी का भाव बनता है वो अपनी मर्जी से किसी निर्माण कार्य में सहयोग करता है। इसी दिव्य भाव शक्ति के कारण आज यह हनुमान मंदिर प्राकृतिक सौंदर्य एवं अपनी भव्यता में भी जिला सिरमौर में सिरमौर है।

स्नेहा
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं. 22304

लोक साहित्य

लोक साहित्य की परम्परा उतनी ही प्राचीन है, जितनी मानव जाति की है। लोक साहित्य किसी भी क्षेत्र में रहने वाले लोगों के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का दर्पण होता है। लोक–मानस सामूहिक अवचेतन से बनता है और इसका व्यक्त रूप लोक–साहित्य होता है। साधारण जनता का हंसना–खेलना, रोना–गाना सब कुछ लोक साहित्य की परिधि में आता है। लोक साहित्य की विविध विधाओं में लोक जनमानस की सहज एवं सार्थक अभिव्यक्ति होती है इनमें लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नाट्य, लोकोक्तियां, मुहावरे व पहेलियां प्रमुख है। लोक साहित्य को मुख्यत :– पांच भागों में विभक्त किया गया है। लोक गीत– लोक सहित्य में लोक गीतों का प्रमुख स्थान है। जन जीवन मे अपनी व्यापकता के कारण इनकी प्रधानता स्वाभाविक है। यह गीत विभिन्न उत्सवों व ऋतुओं मे गाए जाते हैं। लोक गाथा :– इसमें कथावस्तु की प्रधानता होती है। यह अपने कथानक के कारण बहुत बड़ी होती है। हिन्दी क्षेत्र में प्रचलित आल्हा, ढोला, राजा भरथरी आदि गाथाएं इसी श्रेणी में है। लोक कथा :– इसमें माताएं सुन्दर कहानियां सुनाकर अपने बच्चे को आनंद प्रदान करती है। प्रत्येक व्रत के अवसर पर किसी–न–किसी देवी–देवता की कथा पड़ी जाती है। लोक नाट्य :– गीतों के साथ साथ यदि नृत्य भी हो तो आनन्द की सीमा नहीं रहती । ग्रामीण जनता नाट्य को देखकर प्रसन्नता का जितना अनुभव करती है उतना किसी अन्य वस्तु से नहीं। लोक सुभाषितः– हम अपने जीवन में अनके मुहावरों, कहावतों, पहेलियों का प्रयोग करते हैं। इनमें चिर–संचित अनुभूत ज्ञान राशि भरी पडी है। लोक साहित्य मानव जीवन के अतीत का ज्ञान कराता है। वर्तमान का यथार्थ चित्रण करता है। यह भविष्य के निर्माण की प्रेरणा देता है।

महक शर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल न. 21363

नारी सशक्तिकरण

मीरा की अमर भक्ति ज़हर से मर नहीं सकती, झाँसी वाली रानी है किसी से डर नहीं सकती,
मदर टेरेसा, कल्पना हो या सानिया, मैरी, अंसभव क्या है दुनिया मे जो नारी कर नहीं सकती।

पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य ''लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना ज़रूरी हैं।'' एक बार वो कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारना जरूरी है जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूणहत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, मानव तस्करी, वैश्यावृति और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढकेलता है। भारत के संविधान मे उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली है। इस तरह की बुराईयों को मिटाने के लिए लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इसे हर एक परिवार मे बचपन से ही प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए। ये ज़रुरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हो। चूंकि एक बेहतर शिक्षा की शुरूआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिए एक स्वस्थ परिवार की ज़रूरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों मे माता–पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिए सरकार कई सारे कदम उठा रही है। महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिए महिला आरक्षण बिल 108 वाँ संविधान संशोधन का पास होना बहुत ज़रूरी है। ये संसद में महिलाओं की 33 प्रतिशत हिस्सेदारी को सुनिश्चित करता है। सरकार द्वारा दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रुप से भागीदार बनाने के लिए कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है। सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिए पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों मे जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने सच करने के लिए लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की ज़रूरत है।

बिजली चमकती है तो आकाश बदल देती है
आँधी उठती है तो दिन रात बदल देती है
जब गरजती है नारी शक्ति तो इतहास बदल देती है।

साक्षी शर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल न॰ 22219

सड़क-सुरक्षा

रोड़ एक्सीडेंटस इन इंडिया के मुताबिक हर वर्ष तेज़ी से सड़क हादसों की संख्या बढ रही है। भारत मे सड़क दुर्घटना की स्थिति इतनी भयावह है कि प्रति घंटे 18 लोग सड़क हादसे के शिकार होकर अपनी जान गंवा देते है। वहीं प्रति घंटे औसतन 44 लोग घायल भी हो जाते हैं। स्वतंत्रता के बाद से सड़क चुनावों और राजनीति का मुख्य मुद्दा रहा है। इसके दो बड़े कारण है सड़क आम आदमी के जीवन से जुडा अहम् विषय है। साथ ही संसार की सबसे अधिक सड़कों वाले देशों की सूची में भारत दूसरे स्थान पर है। भारत में करोडों किलोमीटर लंबा सड़क परिवहन है जिनके निर्माण एंव रखरखाव मे बड़ी मात्रा में खर्चा होता है। आज भी आमजन में सड़क दुर्घटनाओं के प्रति चेतना बहुत कम है। हर साल करोड़ों दुर्घटनाएँ होती है जिसमें लाखों लोग अपनी जान गंवा देते है। एक शोध के अनुसार स्वतंत्रता के बाद से अब तक दस करोड़ से अधिक लोग सड़क हादसों मे अपनी जान गंवा चुके है, इसके बाद भी इस समस्या को गंभीरता से नही लिया जाता है।

सड़क सुरक्षा के सामान्य नियम व सावधानियां :–

- वाहन चालक के पास वैध दस्तावेज हो।
- चलते या वाहन चलाते समय हमेशा बाईं ओर देखें।
- दुपहिया वाहन चालक और सवार हमेशा हेलमेट का प्रयोग करे, चौपहिया वाहन के चालक व सवार सीट बेल्ट का प्रयोग करें।
- ट्रैफिक पुलिसकर्मी के संकेतों का पालन करें।
- हम सभी को सड़क सुरक्षा की गहरी समझ होनी चाहिए यह वह गुण है जिसे हमें शिक्षित, संस्कृत और सभ्य कहा जाना चाहिए।

अगर समाज का प्रत्येक सदस्य जागरुक होकर यातायात के नियमों के प्रति सजग रहे तो कई बडी दुर्घटनाओं को होने से पूर्व ही रोका जा सकता है। इससे बडी जनहानि और माल हानि से रक्षा की जा सकती है।

निष्कर्ष :– आज से हम सभी निश्चय करें कि जब भी सड़क पर निकलेंगे सुरक्षा के सभी नियमों का पालन करेंगे। ऐसा करके न केवल हम अपने जीवन को बचा सकते हैं बल्कि और किसी का जीवन भी बचाया जा सकता है। आमतौर पर जागरूकता के अभाव के चलते लोग लापरवाह बनते हैं तथा यातायात के नियमों की धज्जियाँ उड़ाते हैं। यदि समाज इन सावधानियों को गंभीरता से लें तो दूरगामी सुखद परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

मुस्कान
बी. ए. द्वितीय वर्ष
रोल न॰ 22250

AIDS

एड्स (एक्वायर्ड इम्यूनोडिफिशिऐंसी सिंड्रोम) एक गंभीर बीमारी है, जो एचआईवी वायरस के कारण होती है। यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को गंभीर नुकसान पंहुचाता है, जिसके कारण किसी भी व्यक्ति के संक्रमण से लड़ने की क्षमता कमजोर हो जाती है। एचआईवी इंफेक्शन का अंतिम चरण होता है।

एड्स एचआईवी पॉजिटिव के लक्षण :– (1) बुखार (2) ठंड लगना (3) गले में खराश (4) शरीर पर चकते होना (5) रात को पसीना आना (6) थकान होना (7) ज्वाइंट पेन (8) ग्रंथि में सूजन । एड्स बीमारी के लक्षण महिलाओं और पुरूषों में अलग–अलग होते हैं–

महिलाओं में लक्षण :– (1) पीरियड्स साइकिल में बदलाव होना (2) अचानक वजन कम होना (3) पेट में समस्या बने रहना (4) बुखार रहना (5) लिंफ नोड्स में सूजन (6) शरीर में लाल चकते होना।

पुरषों में लक्षण :– (1) टेस्टिकल्स में दर्द महसूस होना (2) प्रोस्टेट ग्लैंड में सूजन (3) पेनिस एरिया में सूजन (4) इनफर्टिलिटी की समस्या (5) रेक्टम और टेस्टिकल्स की थैली में दर्द।

एचआईवी के कारण :– एचआईवी एक खास तरह का वायरस है जो अफ्रीका के चिंपैंजी से मनुष्यों में फैला है। संक्रमित व्यक्ति के शरीर से निकलने वाला द्रव या पदार्थ के संपर्क में यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति आता है तो वह संक्रमित हो सकता है।

निम्नलिखित तरीकों से एचआईवी से संक्रमित हो सकते हैं–

(1) रक्त संचरणः– कुछ मामलों में एचआईवी रक्त संचरण माध्यम से भी फैलता है।

(2) इंजेक्शन साझा करना :– एचआईवी संक्रमित व्यक्ति पर इस्तेमाल की गई सुई को किसी दूसरे स्वस्थ व्यक्ति के साथ साझा करने से भी यह संक्रमण फैलता है।

(3) गर्भावस्था, प्रसव या स्तनपान द्वारा :– यदि कोई महिला एचआईवी संक्रमित है तो वह स्तनपान, प्रसव या गर्भावस्था द्वारा अपने बच्चे को भी संक्रमित कर सकती है।

एचआईवी का टेस्ट कब करना चाहिए?

जब किसी भी व्यक्ति को लगे कि वह जोखिम के संपर्क में आ गया है, तो वह तीन से 4 सप्ताह बाद टेस्ट के लिए जा सकता है । क्योंकि जब एचआईवी वायरस आपके शरीर में प्रवेश करता है तो विंडो पीरियड का प्रतीक्षा करना होता है। विंडो पीरियड् वह समय होता है जब वायरस इंफेक्शन सतह पर आ जाते हैं।

एचआईवी संक्रमण की रोकथामः– (1) किसी दूसरे की इस्तेमाल की हुई सिरिंज/इंजेक्शन इस्तेमाल न करें (2) यौन संबंध बनाते समय कंडोम का प्रयोग करें और सही निपटान करें (3) यदि कोई प्रेगनेंट महिला संक्रमित है तो बच्चे को संक्रमण से बचने के लिए इलाज किया जाना चाहिए।

सारांश :– एचआईवी एक प्रकार का वायरस है, जो आपके प्रतिरक्षा प्रणाली को कमज़ोर बनाता है। यही वायरस आगे चलकर एड्स का कारण बनता है जिससे बचने का एकमात्र उपाय एड्स के प्रति जागरूक रहना है। एचआईवी एड्स के इलाज की बात करें तो इसका कोई इलाज नहीं है। हालांकि, संक्रमण को कंट्रोल करने और स्थिति को बढ़ने से रोकने के लिए दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है।

पायल शर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल न. 22268

वृक्ष लगाओ

महामारी का दौर है,
जीने की सबको होड़ है।
अगर जीना है तुझको सालों साल तो
वृक्ष लगाओ बारम्बार।

देख रहे हो तुम कैसे यह विपदा है आई
दूसरी चीजों को छोड़ ऑक्सीजन की ही कमी है आई
यदि पता है तुम्हे सांस लेने के लिए वृक्ष है ज़रूरी
तो काटने से पहले क्यों तुम्हें यह बात ना सूझी।
यदि वृक्ष रहेंगे इस धरती पर
तभी मनुष्य जी पायेगा इस पर
केवल मनुष्य ही नही
और विभिन्न प्राणी भी है पेडों पर निर्भर
क्योंकि ये देते हैं उन्हे रहने के लिए घर
और मिलती है हमें छाया, दवाईयाँ और भरपूर फल।

याद है कुछ सालों पहले सुन्दरलाल बहुगुणा ने
चिपको आंदोलन चलाया था
आंदोलन कर कितने ही पेड़ों को बचाया था
और हमें पेड़ों का महत्व समझाया था।
सही मायने मे उन पेड़ों को जीने का हक दिलवाया था।
क्यों भूल जाते हैं हम
वातावरण से खेलना क्यों नहीं हम करते बंद
याद रखना यदि तुम पेड़ नही लगाओगे
तो जीवन को अंत की ओर ले जाओगे
यदि जीवन बचाने में होना है सफल
तो पेड़ लगाओ अभी और इसी पल।

श्रुति शर्मा
बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न॰ 23209

मेरी माँ

गिरती हूँ तो, हाथ देकर संभाल लेती है
रोती हूँ तो, अपने आँचल से आँसू पोंछ देती है
मुझे बनाने में सबसे ज्यादा अंश है जिसका
वो है मेरी माँ.....
दोस्ती की कमी पूरी करती है
मेरी तरक्की देख इतराती है
रहती हैं परेशान फिर भी मुस्कुराती है
बस तभी मेरा हौंसला बन जाती है
वो है मेरी माँ.....
पापा के हर सवाल का जवाब है
उदास हो जाँऊ तो मेरी मुस्कान है
वो है मेरी माँ.....
और क्या बोलूँ
इस दुनिया मे सबसे अनमोल है, माँ।

आशीमा
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल न॰ 23233

आज का भारत

आज का भारत बदलता भारत है
पूरी दुनिया मे प्रगति करता भारत है,
आर्थिक क्षेत्रों में तकनीकी क्षेत्रों में
पूरी दुनिया में बदलता हमारा भारत है।

चिकित्सा विज्ञान है हर कोई शिक्षित है
शिक्षा से बड़ा है देश का मान बहुत है,
भ्रष्टाचार के खिलाफ हमारी सरकार है
चारों और होता विकास ही विकास है।

रक्षा उपकरणों का अब साथ है
देश के दुश्मनों का बुरा हाल है,
आज का भारत बदलता भारत है
पूरी दुनिया में प्रगति करता भारत है।

प्रिया
बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न॰ 23232

तुझे अपने डर से लड़ना होगा

तुझे अपने डर से लड़ना होगा
लड़कर तुझे आगे बढ़ना होगा,
हर मुश्किल सीढी को चढ़ना होगा
तुझे अपने डर से लड़ना होगा।

यूँही नहीं राह कामयाबी की है मिल जाती
यूँही नही अंधेरी राहों पर है धूप खिल जाती,
सोच समझ कर हर कदम रखना होगा
तुझे अपने डर से लड़ना होगा।

मेहनत कडी तुझे करनी होगी
खुद की परिभाषा खुद ही गढ़नी होगी,
खुद पर विश्वास तुझे रखना होगा
तुझे अपने डर से लड़ना होगा।

छोड़ के राह गलत काम की
कसम तुझे खुद के नाम की,
प्रयास तुझे निरंतर करना होगा
तुझे अपने डर से लड़ना होगा।

अनिशा
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल न॰ 23208

ENGLISH SECTION

Editorial

Dear Students,

There is an inspiring Chinese proverb, 'Teachers can open the door, but you must enter it yourself' it simply points out that teachers are there to support you at every step, but you must take the initiative to reap the benefits of higher education provides you. We understand the struggle you all go through each day to reach the college from various villages. We appreciate the way you all strive despite your social, economic and geographical constraints. Some of the students walk 8-10 kilometers every day to reach the bus stop and then after boarding the bus travel for 20-25 kilometers to reach the college. This clearly elucidates your determination and hard work. But keep in mind it will pay off if you hone your skills consistently and prepare yourself for the challenges the future brings forth.

English being a 'Lingua franca' or' language of the world' has a pivotal importance in today's world. You need to learn it too along with knowing your mother tongue and your dialect. To become proficient in English language you need to work on your fundamentals.Remember, a tall edifice may only be constructed on a strong foundation. For learning any language, the practice of listening, reading, vocabulary and grammar of that language is indispensable.

Though it was a humble attempt on your part to come forward to write and submit the articles for the English Section of our college magazine*Abhivyanjana*. We hope that the next year more students would come forward to submit their articles for the English section.I am grateful to our Chief Editor Mr. Jagmohan Thakur, Associate Prof. of Geography and revered Principal Ma'am Dr. Anita Thakur for giving me the opportunity to be the editor of the English section.

I am thankful to Jyot (Student Editor of English Section) for collecting and editing the articles and wish her good luck for her career ahead.

Happy Reading!

Dr. Rajan Kaushal
Teacher Editor
English Section

GOD LOVES DEDICATION AND HARDWORK

It was Wednesday Shreyas had been very busy at work in his hotel since morning. Every day he would leave for work at 9 a.m. He lived in a small house in a village with his mother, father and little brother. Everyone in the village was aware of the fact that he worked extremely hard every day so that he could feed his family at the end of the day. He was a reticent boy, he could hardly be seen speaking to anybody. His father worked as a peon in an office near the village. His mother was a home maker and his brother was studying in the school. Despite having a happy and loving family, the financial condition of the family was not good. Shreyas would work day and night to better the financial condition of the family. He was brave too to face the challenges which life posed. There was one fear which always remained at the back of his mind that he was living in an old and dilapidated house which his grandfather had built years ago and it was on the verge of crumbling down.

The first target he had in his mind was to rebuild his house where his family could live without any fear. One day Shreyas came from the hotel quite late and as he entered the house the light went out. It was raining heavily outside. All of a sudden he experienced that the walls and the roof started shaking and then the roof blew away because of the storm. But fortunately none of his family members was there in the house as they had gone to a relative's place and because of his alertness he too saved himself. Though, Shreyas was terribly broken from inside as the house they had been dwelling for a long time was lost. However he spent the night at his neighbour's house. In the morning he went to his hotel where he used to work and narrated the entire story of the crisis of the previous night. The owner of the hotel was a very nice man and he immediately offered him to stay at his house which he was leaving as he had to shift to a bigger house in the town. As the owner was very impressed by the honesty, dedication and hardwork of Shreyas he finally gave his hotel on lease to Shreyas to run and told to give him a certain amount every year and rest of the profit he could keep. Shreyas put his heart and soul into his work and did wonders and made a lot of profit. Within two years he had built a beautiful house by dint of his hardwork. It simply teaches us that if your intentions are right and if you are dedicated and honest towards your work then even God helps you finding a way out of your problem.

Jyoti Thakur
B.A. 3rd year
Roll No. 21217

INSPIRING THOUGHTS

- Think positive, believe in God and always do the right.
- Success usually comes to those who dare and act.
- Never break four things in your life trust, promise, relation and heart because when they are broken they don't make a noise when broken but give enormous pain to the person.
- If you want to shine like the Sun first burn like the Sun.
- What we think is what we become.
  Everything starts from a zero.

Sakshi Sharma
B.A. 2nd Year
Roll No. 22219

BHURESHWAR MAHADEV

If you are looking forward to going on a short trip from Sarahan (Sirmour) then the best place to visit in the vicinity is Bhureshwar Mahadev. It is a perfect destination for many reasons, but principal reason is being the religious place with holy vibes. According to a legend Lord Shiva and Mata Parvati had witnessed the war of Mahabharta being fought from a cliff on the top of the mountain. On the same cliff this temple called Bhureshwar Mahadev has been constructed. Once you are there you would be able to see the a panoramic view of verdant valley, lush green forests and you would find yourself very close to the clouds as if you could touch them. There are two ways if you want to reach the temple while trekking. The first trek route starts from a place called Kawagdhar. This is extremely scenic. There are various enthralling scenes you come across while scaling to the top like cows, goats and sheep grazing in the pastures and you may even hear the ringing sounds of bells tied in their necks. You will find shepherds taking rest under the shade of a tree, innumerable species of beautiful birds, cool breeze blowing through the pine groves. In this trek, stones have been laid to make it easy to walk on. You may take 30 to 40 minutes normally to reach the top but it truly depends on your pace of trekking. The second route is also beautiful but that is mostly used to go up by vehicles and it starts from a village called Panwa. Though, it is a shorter route if you trek but it is less scenic. No matter which route you follow once you reach the top it is exhilarating and the view is breathtaking. After paying obeisance in the temple of Lord Shiva all your fatigue will evaporate. There are open pastures around the temple where you may sit and have your food and snacks in the lap of nature.

Happy Journey……

Aryan
B.A. 2nd Year
Roll No. 22315

Don't Doubt Yourself

Don't doubt yourself
Because you are perfect to yourself
No matter what
Don't ever give up
Try to express your thoughts
No matter what others feel
No matter what others believe
No matter what others think about you
Don't break down
Always believe in yourself
You are perfect to yourself
Fight for a better day
Don't ever you stop
No matter how hard
Life is going to be
Stay brave and stay strong
Let your soul be free
Always stand for yourself
And trust in yourself
So, don't doubt yourself
Because you are perfect to yourself

Palak
B.A. 2nd year
Roll No 22221

Beauty of Mind is more Important than the Beauty of Body

Beauty doesn't necessarily mean to be the beauty of the body only. It doesn't confine to the physical body alone. However the beauty of the body is an illusion or an illusion that deceives the eyes. But it is not easy to deceive the soul. Beauty of the body may provide pleasure to our eyes but not to our mind. Mind only believes in the beauty of the soul. The beauty of the body is an illusion may be explained with the help of an example of Lord Krishna who was dark in his complexion but captivated everyone's heart, with the beauty of his, heart, soul and mind. That's why it is said that soul is more beautiful and important than the body. The actions, thoughts and values of a person speak a lot about his/her identity not just his/her beauty. A person's character is not revealed through his/her beautiful body but by his actions, values and behavior. The beauty of the mind and heart is more beautiful than the beauty of body that's why beauty of the soul is considered loftier than the beauty of the body.

Priyanka Sharma
B.A. 2nd Year
Roll No 22282

पहाड़ी अनुभाग

सम्पादकीय

राजकीय महाविद्यालय सराहां, जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश कि सत्र 2023– 24 की वार्षिक पत्रिका ''अभिव्यंजना'' का यह दूसरा अंक है। पत्रिका के इस अंक में 'पहाड़ी अनुभाग' के संपादन का सौभाग्य मुझे मिला, इसके लिए में प्राचार्या महोदया का हृदय से धन्यवाद करता हूं। पहाड़ी अनुभाग का संपादन करते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि इसके माध्यम से हम अपनी भाषा, बोली, साहित्य व संस्कृति को जीवित रखने व आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित करने का मौका मिला है। जैसा कि कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसलिए यह जरूरी है कि हम अपने साहित्य को बढ़ावा दें ताकि आगामी पीढ़ी भी इससे रूबरू हो सके। पहाड़ी हमारी जन्मभूमि की भाषा है। इसे बोलते व लिखते हुए हमें गर्व की अनुभूति होनी चाहिए। इसका प्रयोग करते हुए हमें खुलकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति करनी चाहिए। लेख लिखना अथवा रचना करना एक कला होती है। इस कला का उपयोग करके हम अपने विचारों को प्रकट कर सकते हैं जिससे वर्तमान व भावी पीढ़ी लाभान्वित हो सके। यह बोली हमारी धरोहर है जिसे जिंदा रखना, सजाना, संवारना व बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। विविधता से भरे हमारे देश में अनेकों बोलियां व भाषाएं बोली जाती है। जैसा कहावत में भी कहा गया है कि 'कोस –कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।' अतः भाषा की विविधता वाले समाज में अन्य भाषाई लोगों तक अपनी भाषा व संस्कृति की पहुंच बनाने में लेखन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस माध्यम से हम अपनी भाषा व बोली का प्रचार–प्रसार कर सकते हैं। मैं माता सरस्वती से प्रार्थना करता हूं कि पत्रिका की महत्ता बनी रहे और पाठक को भी संतुष्टि मिले। मैं सभी विद्यार्थियों से आग्रह करता हूं की पहाड़ी बोली को बढ़ावा दें और ज्यादा से ज्यादा लेख लिखकर इसे और अधिक समृद्ध करें। मैं उन विद्यार्थियों का दिल से धन्यवाद करता हूं जिन्होंने अपने लेख इस पत्रिका हेतु दिए हैं।

प्राध्यापक संपादक
दिनेश कुमार,
सहायक आचार्य राजनीति शास्त्र विभाग

विजट महाराज की गाथा

विजट महाराज जी रे पिता रे नाओ राजा भुकडू थिऊ। माता रो नओ पदमावती थिऊ। थुकडू शाया (राजगढ़) रा थिआ । तेसरी शादी सराही पदमावती साथी हुई थी। राजा भुकडू री कोई संतान नी थी। तब सी ऐकी पंडतो गेच्छके गोआ । तेनिए पंडते तेसीख रास्ता दिया । जे तेई जम्मू– कश्मीर खे जाणा पड़ला। तेथ एक महात्मा रों था। जू छः महीने सूतो रो छः महीने जागों था जब राजा तेसी पंडतों गेच्छके पहुंचा । तेसी पांद चूहे बिल्ली कुदणे लागरे थे, जब राजे सी पंडत जगाया तो तेणीए अपना पहाड़ी साँचा खोला । भुकडूए तेसी पांदे कुछ सोने री अशर्फियाँ राखी । पंडते बोला जे तेईं पोंडतो री छूटी साथी ब्याह करना पड़ला । तब तेरा वंश आगे चालला । तब राजे राणी पदमावती री आशा लोई रेका ब्याह करने ख। जियों रा नाम दुदमा थिआ। तिओं दा बाद राजा रा वंश चाला । जब राजा री दूसरी राणी गर्भवती वणी तबी राजा री पेली पत्नी भी गर्भवती बणी। दुछमा रा पेहला बेटा शिरगुल हुआ। राणी पदमावती रे विजट हुआ । तेंद बाद एक बारी जंगलो दा एक लकडहारा डेया । तेसी तेथ चीश (प्यास) लागी । तेय तेसी एक आवाज शुणी। तेनिए देखा की एक बोयीर पाणी भरने लागरी थी । तब तेनिए पुछा की तू कुण असी रो पाणी कोधके नियी । ऐथ आस–पास कुइ गाँव नथी । तिये बोइरे ईशारा किया कि ऐथ बिजट महाराज रा जागरण ओसो। तब तेणी आदमीए जगराते दी जाणे री जिद की । तिए बोइरे बोला जे जीश आँ बोलूएं तिशा करी ना तो जिंदा नी बचला।

तिएं बोला जो अपनी साथी 17 लोग लाई रो जंगलो मेई मुर्ती सराहाँ गाँव लोजी। पाहु मुड़े रो नी देखी जाई पर। जब इन 17 आदीमएं पाछू देखा तो तिनोरी मौत ओगी । ई इतिहास विजट महाराज रा अनंत असो। मुर्ती 12 साल बादकुंभ हरिद्वार के सनान करणे जाओ । विजट महाराज री 12 छड़ी असो जू की सिरमौर और चौफल में ब्रमण करो।

नितिका अत्री
बी.ए. द्वितीय वर्ष
22261

हिमाचली करियाला

करियाला एक त्वार अस्तिया जू दवाली दे बाद मनाया जाओ। ई त्वार पड़वा दे लोरो ग्यासे तक रोजे रेकी–रेकी जगा मनाया जाओ। करियाला देवी–देवताख खुश करणेख मनाओ । सारे गांव रे कठे ओए रो मंदरो गेछ आगे रो गेना लाओ रो त तेसरा पूजन करो । पूजन खिलो–पताशे साए जाओ। सबीदे पली चंद्रावली नचाओ । चंद्रावली मर्दी री बनो बेइरो कापड़े पेरे रो । मओ पंद चुंटी डाले रो, लातोम घूंघरू बादे रो ना तेइदे बाद जू कलाकार आरो से खाड़ा बादो। सा दो री मंडली आओ रो गाना गाओ। जू इस अस्तिया–साधू की मंडली में बसियो ना कोई रामा, जो भी बसे वो साधू हो। लोगोख खुश करने री खातरी ब्या कराओ । त जेंदरा व्या ओ से गुमणे जाओ। आपण सामान लोए रो से चलणे लगरो रो तब एक कुली आआ। कुली तेंदरी टेयी चको रो बान्ना बणाए रो बाबूजी रे सारे कापड़े खलादो। तब बबयाणी कुली री साय बागजो । एइदे बाद कलाकार पहाड़ी नाटी, भजन रो गिद् गाओ रो नाचो । ई सब कुछ रात चलदा रो । तब बल्खि आरती करो रो आवा दलाओ जेसी ईष्टो रे नाओ दे कटियाला करो। ईष्ट आगे रे गेने मंज नाच तेनो गई रक्षा रे चावल लो सब जणे । तेदू दे बाद सब आपणे गरेख जाओ। जेभ ई त्वार मणेख रो जाओ तेथ बूढ़ी दवालीख मनाया जाए

नीतिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
22269

रेणुका तीर्थ

हिमाचल प्रदेश मेज बहुत तीर्थ स्थान ओसदीए, जिनो मेंदा एक रेणुका तीर्थ स्थान भी ओसदीया। इसी तीर्थ स्थानों में एक अतराष्ट्रीय स्तर रा मेला भी लागों जू दिवाली रे दश दिनों बाद लागूं । ऐसी मेली रा इतिहास बहुत पुराणा ओसदीय। ऐसी सीानों में परशुराम ताल रो प्रकृति री शोभा बढ़ाने वाली रेणुका झील ओसदी । रेणुका परशुरामों री माँ रो ऋषि जमदग्नि री लाड़ी थी । रेणुका झील रेणुका माँ रे मोरने दी बणी । तबो इयो झीलो री आकृति औरतो जैशी ओसदी ।

दशमी रे दिनों परशुराम जी अपनी माई मिलणी आँऊ था। तबी इ मेला दशमी रे दिनों लागों। ऐसी मेले देखने रो घुमणे बहुत लोग आँओं।

लक्ष्मी देवी
बी.ए. द्वितीय वर्ष
22315

बिशु रा साजा

ईशे तो एकी सालों में चार साजे । आओं हेरो तिंदे मेंदा एक साजा उसदिया बिशु रा साजा । इ साजा बेशाख रे मिंन मेंझ मनाया जाओ एदिरी खातिर दिख बेशाखी रा साजा बी बोला जाओं। ऐसी दिनोख मारे चिड़ी गुड़ रो आटे रां त्वार बी दियों, रो तेनी बांए गै राख दो । ऐसी दिनो स्वीरए घोरे खीर रो पटाएंडे बी लूओ रो तेनी साथी थाम, दवार हेरों आपने देवी देवता बी पूजों । ऐसी दिनों धियो धैणी आपणें पेऊकेख पाउणें बी आओ। ऐसी साजे ख ईशा बी बोला जाओ कि काफलों रे पेड़ो दे काफल रे 20 बाने बी पाकों ।

मेहक तोमर
बी.ए. द्वितीय वर्ष
22208

दिवाल रा त्यौहार

दिवाली रा त्यौहार कार्तिक महीने री अमावास्या रे दिन मनाया जाओ । दिवाली आने दे पिली ही दिवाली री त्यारी शूरू औजों । दिवाली रे दिन सभी जण बहुत खुश लगरों । तेसे दिनों कई प्रकार से पकवान बनाए जाओं। हर घोरो से अलग–2 पकवाण ओं । जिन्दे मारे तो पकोड़े, खीर–पूड़े, दाल–चावल, कड़ी, जलेबी आदि पकाओं। तेस दिनों मारे घरेख गांवो मिंदे सभी बच्चे खाणा खाणे आओं। सब जण नौए–2 कापड़े पेरों । मारे घरे तेस दिनों लक्ष्मी माता पूजों और आपणे सभी देवते भी याद करों । सारे बच्चे तसनो पटाके भी चलाओं । पटाखों साए सारा आसमाण चम–2 औ जाओ। इशा लगो कि दिन लगरोआ औंणे । तोदे बाद में सबी जण आपणे घरे दे आग लोए रो जाओं तथा जरे करों । जरे ओंदे साथे कई प्रकार से पटाकड़े चलाओं । जरे करे रो जब घरेख आओं तब जरे मी आग लेंओ और सारे घोरो मंज दिये जलाओं तिंदा बाद सारे घोरो मंज रोशणे औजों जिंदी साए इशा लागो कि घोर चमकने लगरोए। इदी सबी साए दिवाली रा दिन तो खत्म औजो । पर दिवाली नीं औंदे । दिवाली तो कई दिन तक चलों तथा कांजन पको। पापणे आओं–जाओं, शक्कर से बेंट देओं, खील पताशे खाओं, कोजन खाओं । तभी दिवाली मेरा पंसदो रा त्यौहार अस्तिया।

प्रीतिका अत्री
बी.ए. प्रथम वर्ष
23221

''घराट''

घराट रा अर्थ अस दिया पहाड़ी चक्की । जे मारे गांव री बात की जाओ तो इ पुराने समय दी चली आओ री। मारे गांव मेंज कुकड़ी, हल्दी, मिरचो, गेंहू ये सारी चीजों घराट मेंज पीशी जाओ। अब इ घराट किशा चलो? घराट पाणी रे धोरे दा बनाया जाओ क्योकि इ घराट पाणी रे सहारे हेरो पाणी रे बल दे चालो । घराट मेंज दू मोटे पत्थर हों जिनो खे 'पाट' बोला जाओ। निचला पत्थर स्थाई रों हेरो तेइदे उपरों रा पत्थर पाणी साथे गोल घुम्द्धा रो । तब तेनिए कुकड़ी, गेहूँ आदि सारी चीजों बारीख पिशी जाओं । जीनों खे मारी पहाड़ी भाषा मेंज पिष्णा बोलो । तब एनीरा पिशो रो आटा बन जाओ। जब तक घराट मेंज़ पिष्ण हो तब तक ई चल्दा रो जब पीष्ण खत्म हो जाओ तब ई आपी बंद हो जाओ। तो ईशी होओ ई मारी पहाड़ी

रीतू
द्वितीय वर्ष
22207

प्यारा हिमाचल

मेरा हिमाचल सोभी दा प्यारा
मेरे दिलों रा राजा मेरी आँखे रा तारा
12 ओसो जिले इन्दे शिमला जोसों राजधानी
देवी देवते री भूमि ओसो माता बसो ऐथ ज्वालारावी
भोले भाले लोक ऐथे रे बड़ी वीरों री कहाणी
वर्फी रे पहाड़ इन्दे मिठे और शुद्ध ऐथे रावाणी

मेरा हिमाचल सोभी दा प्यारा
मेरे दिलों रा राजा मेरी आँखे रा तारा

खेती बाड़ी पशुपालन सेव रे बाग बगीचे
खाडू भेड़ बाकरी री ऊनो रे नौखे बनोद गलीचे
खाने खे सीड़ो साथी लादे घीओ रे नाले
कई रंगो दी राजमा ओंदी माश ओंदे बड़े काले

मेरा हिमाचल सोभी दा प्यारा
मेरे दिलों रा राजा मेरी आँखे रा तारा

बड़ी सजदी वेशभूषा ऐथे री पांदे सदरी काली
ऊनों रे बणे वस्त्र पेहनदे टोपी कलगे आणी
ढोल नगाड़े करनाल शहनाई ओसो ऐथे रे साजबाज
शादी ब्या देव कार्य दा नारी मुजरे दा रवाज

मेरा हिमाचल सोभी दा प्यारा
मेरे दिलों रा राजा मेरी आँखे रा तारा

श्रुटि शमा, बी.ए. प्रथम वर्षा, 23209

पहाड़ी संस्कृति

सबी दोस्तो ख मेरा नमस्कार निख ई बड़ी री बात असो कि मारे राजकीय महाविद्यालय सराहाँ री 'अभिव्यजना' नाओ री पत्रिका ऐसी सालो बी छपणे लग रोई। आ आपनी प्राचार्य डॉ अनीता ठाकुर रो प्रो. दिनेश कुमार रा एहसान मानू जिने मिख पत्रिका रे पहाड़ी संस्कृति रे बारे दा लिखणे रा मौका दियां पत्रिका रा ई पहाड़ी अनुभाग मारी सिरमौरी संस्कृति बचाए राखणे रा एक बहुत ही बड़ी कोशिश असों । मारे सिरमौरी री पहाड़ी संस्कृति बहुत ही महान् असों । ऐथ ऊंचे–2 पहाड़, हरे–भरे खेत रो कल–कल करदे नदी–नाले सिरमौरी सुंदरता दे चार चाँद लगावों। ऐथ तीर्थ सीान बी असो जिंदा चूड़धार, पाँवटा–साहिब रा गुरूद्वारा, माँ रेणुका झील, भगवान परशुरा ताल, माँ भगायणी मंदिर हरिपुरधार माँ बालासुंदरी मंदिर त्रिलोकपुर, फाँसिल पार्क सकेती आदि। मारे सिरमौरो दे कई अफसर रो नेता हुए जिनो मेंदे डॉ. यशवन्त सिंह परमार जी जु हिमाचल निर्माता रो मुख्यमंत्री बी रोए। सिरमौरी पहाड़ी संस्कृति रो जेतनी तारीफ करों तेतनी कम असों। पहाड़ो रे लोग बहुत ही मेहनती ओं। मारी महाड़ी संस्कृति दे लोक–गीत, लोक–नाट्य, खान–पान, रहन–सहन भोत ही बड़िया असों, जिंदी मारे इलाके री छाप देखणे ख मिलों । सिरमौरी लोक–गीतों दे–झूरी, शीष्णे, गांगी, मिंउरी, रासो, मुजर, बिणी, सोहीरान लोक गीत प्रसिद्ध असों। मारे सिरमौरी रा पहनावा–सुथण, चोलणा, लोइया असों। मारे पहाड़ो मेज ऐकी साल मेज चार साजे मनाओ जू कि जनवरी अप्रैल, जूलाई, अक्तूबर मेज मनाओ। जनवरी रे साजे ख तो तलोए बी पाथो बाकी चारो साजे ख असकली, खीर–पटांडे, लुशके बी बणाओ। अप्रैल मेज बिशु रा साजा मनाओ। ईशा बोलों कि ऐदिख बिशु रा साजा इसलिए बोलों क्योंकि इस टाइम 20 काफल पाकों। हर साजे खा लोग ऐकी–रेके रे मेच्छके पावणे बी जाओ।

आँ ध्न्यवाद करना चाहूं आपणे भाई–बोइणी रो मित्रो रा जिने ऐसी पहाड़ी अनुभाग दा आपण योगदान दिया। मी पुरा विश्वास असों की पत्रिका रा ई पहाड़ी संभाग तुमों सबी बड़िया लागला।

आशिमा ठाकुर, बी.ए, द्वितीय वर्ष, 22305

PLANNING SECTION

Editorial

Dear students,

It gives me immense pleasure to be the teacher editor of the planning section. Planning section covers the articles related to the economy, commerce, management and administration. It gives you an opportunity to delineate your views on the topics which may be very useful to give shape to our upcoming policies related to economy and administration. We expect you to be innovative and visionary if we as a country want to stand tall among the comity of nations and if we want to make our country rich, prosperous and strong.

The articles you have submitted are a testimony to the fact that you have started to put in efforts to come up with some groundbreaking ideas which will also ignite the curiosity and thinking of your friends to forge ahead on the path of innovative thinking.

All the great movements and reformations in any country started with some new perspectives, which laid the foundation of a solid future for that nation. At the later stage, some of those ideas become part of the value system and ethos of that nation and society. So keep thinking and pushing your boundaries to provide new and innovative ideas. I am grateful to our Chief editor Mr. Jagmohan Thakur (Associate Prof. of Geography) and our esteemed Principal Dr. Anita Thakur for entrusting me with this task of teacher editor of planning section. I also extend my gratitude and blessings to Nikhil for being the student editor and helping me to motivate the students to write the articles.

Happy Reading!

Teacher Editor:
Sudesh Kumar
Assistant Professor
Department of Commerce

GST (GOODS AND SERVICE TAX)

GST means goods and service Tax. It is goods and service tax. GST is an indirect Tax. Which has to be paid on the purchase of an item or avaling a service. It is a tax that is lived on every goods and services in the country. GST was implemented in india on 1st July 2017 Since then many changes have been made in it. All types of taxes were. removed and tax was imposed which is called GST. GST has brought a lot of improvement in all the areas. Earlier people had to pay different types of taxes due to which there was lot of trouble but now only one tax has to be paid GST With the advent of GST. Transparency has come in the business.There is no tax on top of tax in GST. Due to GST being a completly online system the possibilty of rigging in it is reduced. The objective of GST is to bring a uniform tax regine.

Important facts about GST : The main aim of Implementing GST was one nation one tax and one market. France was the first country to implement GST in 1954.Vijay kelkor's commitee suggested the implementation of GST. Assam was the first state to pass the GST bill.The committee to design the GST model was the asim Das Gupta committee. In india, GST was first proposed in the year 2000. The headquarter of the GST counsil is in New Delhi Union finance minister Nirmala Sitharaman is the current chair person of GST counsil. GST is a unified tax system that replaced multiple indirect taxes levied by both the central and state Government. Under GST both the central and state Government share the authority to levy and collect taxes on goods and services the introduction of the GST is a very significant step in the field of indirect tax reforms in india. By amalgamating a large number of central and states taxes into a single tax. GST will mitigate ill efects of casscading or double taxation in a major way to pave the way for a common national market.

Shabnam Thakur
B.Com 1st year
Roll No 23101

THE PILLARS OF ORGANIZATIONAL SUCCESS EXPLORING THE FUNCTIOS OF MANAGEMENT

Introduction : Introduction to the concept of management and its importance in achiving organizational goals. verview of the functions of management as foundational principles for effective leadership and decision making.

Planning : Explanation of the planning function, including to process of setting goals, formulating stratergies and developing action plans. Importance of planning in providing directions, uncertainly and allocation of resources efficiently.

Organising : Discussion on the organising function, which involves structuring resources and activities to achieves organisational objectives. Exploration of organizational design, delegation of authority, and establishment of communication channels to facilitate coordination and collaboration.

Leading : Examination of the leading function, focusing on the role of managers in inspiring, motivating and guiding employees towards common goals. Discussion on leadership styles, communication techniques and stratergies for building performing teams.

Controlling : Analysis of the controlling function, which involves monitoring performance comparing results with objectives and taking corrective actions as necessary. Improtance of feedback mechanisms, performance measurement systems and continuos Improvement processes in ensuring organizational effectiveness.

Nikhil
B.Com 3rd Year
Roll No 21104

The Evolution and impact of E-commeree on modern Business

E- Commerce short for electronic commerce has undergone a remarkable evolution over the past few decades, reshaping the way businesses operate and consumers shop in the digital age. The advent of e commerce has transcended geographical boundaries, providing unprecedented opportunities and challenges for businesses worldwide.

Global reach and accessibility:

E- Commerce has eliminated the constraints of physical location, allowing businesses to reach a global audience. This expanded reach has opened new markets, enabling even small businesses to connect with customers around the world.

Diverse product range:-

The digital marketplace offers an extensive and diverse range of products and services from everyday essentials to niche and specialized items E- commerce platforms Later to abroad spectrum of consumer needs.

Convenience and flexibility:-

One of the most significant advantages of E- commerce is the convenience it offer to both businesses and consumers.

Personalization and customer experience: E- Commerce platforms leverage data analyst to understand customer preference and behaviour. enhanced customers experience leads to increased customer satisfication and loyality.

Environmental Consideration:

The environmental impact of E commerce including packaging waste and increased carbon emission from transportation, is a growing concern.

Conclusion:

E-Commerce has transformed the landscape of modern business, offering unparalleled opportunities for growth and innovation.

Ayush Sharma
B.Com 3rd year
Roll No 21103

NON BANKING FINANCIAL INSTITUTIONS

Introductions : Non banking financial institutions NBFI's play a crucial role in the financial ecosystem by offering a diverse range of financial services beyond traditional banking from providing credit to facilitating investments. NBFI's contribute Significantly to economic growth and development. This article explores the various aspects of NB including their functions, types of the economy.

Functions:-

Providing Credit : NBFI's extend Credit facilities to individuals and businesses, often specializing in niche markets or catering to specific need such as consumers finance, micro finance and leasing.

Mobilizing Savings : While not accepting deposits like banks, NBFI's mobilize savings through various investments products such as mutual funds pension and insurance policies.

Facilitating investments : NBFI's Play a vital role in channeling funds from savers to investors, Thereby supporting capital formation and economic growth.

Types of NBF's :

Insurance Companies :- These institutions provide coverage against various risks such as life, health, properties and liability, thereby promoting financial security.

Mutual funds : Mutual funds pool funds from investors to invest in diversified portfolios of securities offering opportunities for small investors to participate in capital markets.

Pension Funds :- These funds collect contributions from individuals durings their working years and provide retirements benefits through various investment. Schemes.

Leasing Companies :- Leasing NBF's facilitate the leasing of requirements, machinery and vehicles enabling business to acquire assets without substantial up front costs.

Hardik Jindal
B.Com 2nd Year
Roll No 22101

भारत मे आर्थिक सुधार

आर्थिक सुधारो या नई आर्थिक नीति

नई आर्थिक नीति या अर्थिक सुधारो से जुलाई 1991 के बाद से किये गए विभिन्न नीतिगत उपाय और परिवर्तन शामिल है। इन सभी उपायो का साझा लक्ष्य अर्थव्यवस्था की कुशलता को बढाता है नये आर्थिक सुधारो का उददेश्य अर्थव्यवस्था मे और आर्थिक प्रतियोगी वातावरण तैयार करना है ताकि अर्थव्यवस्था मे और आर्थिक प्रतियोगी वातावरण तैयार करना है ताकि अर्थव्यवस्था मे उत्पादकता तथा कुशलता मे सुधार हो सके ।

नई आर्थिक नीति की आवश्यकता

नई आर्थिक नीति की आवश्यकता मुख्य रूप से निम्नलिख्त से अनुभव की गई। **राजकोषीय घाटा** सन् 1991 से पहले सरकार के विकासात्मक खर्चो मे लगातार वृद्धि होने के कारण राकोषीय घाटा बढ़ता जा रहा था। 1981– 82 मे यह सकल घरेलु उत्पादन का 5.4 प्रतिशत था। 1990–91 मे यह बढकर 8.4 प्रतिशत हो गया। राजकोषीय घाटा करने के लिए सरकार को कर्जे लेने पडते है तथा ब्याज देना पडता है।

प्रतिभात भुगतान संतुलन मे वृद्धि

वस्तुओ तथा सेवाओ को आयात करने के लिए विदेशी विनिमय की आवश्यकता होती है। यह विदेशी विनिमय वस्तुओ तथा सेवाओ का निर्यात करने तथा विदेशी निवेश के अंतर प्रवाह से प्राप्त की जाती है।

कीमतो मे वृद्धि –

भारत को कीमतो मे काफी वृद्धि हुई। 1990–91 मे मुद्रा समीति की औसत वार्षिक दर बढ़कर 10.3 प्रतिशत हो गई। 1991 से पहले लगातार तीन वर्षो तक अच्छी मानसून के बावजूद खाद्य पदार्थे की कीमतों में काफी वृद्धि हुई। सार्वजनिक क्षेत्र की असफलता – भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के 1951 में केवल 5 उद्यम थे।परंतु 1990–91 में उनकी संख्या बढ़कर 240 निवेश किया गया था। जिनमें पहले वर्षो तक इन उद्यमों का कार्यक्रम संतोषजनक था। परंतु इसके बाद इनमें से अधिकतर उद्यमों में हानि होने लगी। मूचे विश्व को एक वैश्विक इकाई बनाना है अर्थात विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओ मे आपसी सहयोग बढ़ाना है।

आर्थिक सुधारों की मुख्य विशेषताएँ –

नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषता अर्थव्यवस्था का उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण करना है।

उदारीकरण –

उदारीकरण में व्यावसायिक इकाइयों पर लगे अनावश्य प्रतिबधों का नियंत्रणों को कम किया जाता है। तथा प्रसानिक बाधाओं को क्रम किया जाता है। नई आर्थिक नीति से पहले हमारी अर्थव्यवस्था में लागू होने वाले आर्थिक प्रवधान व्यावसायिक इकाइयो के विकास से बाधा थे। औद्योगिक लाइसेसिंग नीति, निर्मात, आयात, नीति, विदेशी विनिमय नियत्रण व MRTC अधिनियम के प्रावधान इतने सख्त थे कि नये उद्यमी व्यवासाय स्थापित करने मे हिचकिचाते थे। वर्तमान उद्यामी अपने व्यवसाय के आकार को बदा नही पा रहे थे। इससे अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास की गति धीमी हो गई और हमारी सरकार को आर्थिक सुधारो की आवश्यकता अनुभव हुई कुछ अन्य देशों जैसे कोरिया थाइलेड सिंगांपुर में उदारीकरण के परिणाम काफी अच्छे रहें।

उदारीकरण के लिए किए गए उपाय –

औद्येगिक लाइसेसिंग में उदारीकरण नई आर्थिक नीति

वैश्वीकरण का अर्थ है –

एक देश की अर्थव्यवस्था को अन्य देशो की अर्थव्यवस्था से जोडना तथा विदेशी पूँजी विदेशी तकनीक व स्वंतत्र व्यापार को बढ़ाया जाता है। वैश्वीकरण का अभिप्राय विश्व अर्थव्यवस्था में आय खुलेपन बढ़ती हुई परस्पर आर्थिक निर्भर तथा आर्थिक एकीकरण के फेलाव से है । नयी आर्थिक एकीकरण के बढ़ावा दिया गया है। इसके अंतर्गत विदेशी पूंजी, बहुराष्ट्रीय निगमों विदेशी वस्तुओं पूजीं व लोगों के अंतर्गत पर लगी रूकावटो को कम किया जाता है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व की अन्य अर्थव्यवस्था के साथ सहयोग बढ़ा है।

अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के लिए उपाय –

उदार विदेशी व्यापार नीति –

विदेशी व्यापार नीति में आयात व निर्यात से संबधित नीति को शामिल किया जाता है । वैश्वीकरण को बढ़ावा देने के लिए विदेशी व्यापार को उदार बनाया गया है।

निर्यात – प्रोत्साहन विश्व व्यापार में भारत के निर्यात को बढ़ावा देने लिए नयी आर्थिक नीति में निर्यात प्रोत्साहन से संबधित विभिन्न उपाय किये जाते है।

विदेशी निवेश में वृद्धि –

आर्थिक सुधारों से पहले भारत में सीापित किसी उद्योग में विदेशी पूँजी की अधिकतम सीमा 40 प्रतिशत निर्धारित की गयी थी। नयी आर्थिक नीति मे इसे बढ़ाकर बहुत से उद्योगों क्षेत्रों के लिए 100 प्रतिशत कर दिया गया है।

Name : Abhishek
Class: B Com 3rd Year
Roll No. 21102

VARIOUS ACTIVITIES OF THE COLLEGE DURING THE SESSION 2023-24

MEMBERS OF TEACHING & NON-TEACHING STAFF

GOVT. COLLEGE SARAHAN

Contact : 01799-292102
Email: gdcsarahan2014@gmail.com | Website: https://gcsarahan.edu.in

FIT INDIA

ROAD SAFETY